International Journal of Applied Research 2020; 6(9): 477-479

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(9): 477-479
www.allresearchjournal.com
Received: 19-07-2020
Accepted: 17-08-2020

प्रमोद कुमार सिंह
मैथिली विभाग, नेट. जे. आर. एफ.तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रमोद कुमार सिंह
मैथिली विभाग, नेट. जे. आर. एफ.तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

जल–कोशीः एक दृष्टि

प्रमोद कुमार सिंह

प्रस्तावना

पहिने प्रकृतिक रहस्यकेँ दर्शन आ विज्ञान, दुनू सोझराबैत छल मुदा आइ एहि रहस्यकेँ विज्ञान एकसरे सोझरा रहल अछि। ओना प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री स्टीफन हॉकिंग्स दर्शनकेँ अप्रासंगिक करार देने छथि। हिनक दृष्टिमे भौतिक विज्ञान आब एतेक विस्तार पाबि गेल अछि जे दर्शनशास्त्र एहन कोनो विषयक आवश्यकता नहि रहि गेल अछि।[1] ओना विज्ञानक दर्शन सेहो होइत अछि जाहि आधारपर वैज्ञानिक, नैतिकता आ नीतिक गप्प करैत छथि। ई सत्य जे आइ प्रकृतिक निकट जतेक विज्ञान अछि ततेक अन्य विषय नहि तथापि सामाजिक अप्राकृतिक चिंतन तथा एकर नीति–निर्देशकेँ दर्शन फरिच्छ करैत अछि। विज्ञान प्रकृतिक रहस्यकेँ सोझराइये टा नहि रहल अछि, समस्याक निदान सेहो ताकि रहल अछि जाहिसँ समाजकेँ धर्म आ नीतिक विषयगत समीक्षाक लेल बाध्य करैत अछि। हमरा जनैत विज्ञान प्रकृतिक प्रमाणिक आ प्रयोगशील अध्ययन आ अन्वेषण थिक तथा टेक्नोलॉजी समस्याक निदान। आइ विज्ञान आ टेक्नोलॉजी प्रकृतिक सूक्ष्म अध्ययन क' समस्याक समाधान क' रहल अछि जाहिसँ नव–नव अनुसंधान आ अविष्कार मनुष्यक समक्ष आबि रहल अछि तथा एहि दृष्टिसँ नीति आ नैतिकताक नव मानदण्ड तैयार भ' रहल अछि।

जल वस्तुतः भौतिक पदार्थ थिक। दार्शनिक दृष्टिकोणसँ एकर उत्पत्ति ईश्वरसँ भेल अछि[2] मुदा आधुनिक विज्ञानक दृष्टिसँ ई सृष्टिक क्रमिक विकासक, परिणति माने तत्व थिक। कोशी नदीक प्रकृति जले संदर्भसँ व्यापक अछि। एकर ख्याति महर्षि विश्वामित्रसँ अछि जिनका कोशीए तटपर ब्रह्म ज्ञान भेल छलनि आ प्रकृति गायत्री मंत्रक रूपमे हिनका प्राप्त भेल छलीह। एही ठामसँ प्रकृति दर्शनक दिग्दर्शन प्रारंभ होइत अछि आ यैह कोशी सांस्कृतिक चेतनाक आधार बनैत अछि जे कपिल मुनिक सांख्य दर्शनमे प्रकृति–पुरुषक रूपमे उतरैत अछि।

प्रकृतिसँ तात्पर्य अछि, ब्रह्मण्ड (ब्रह्म + अण्ड) जाहिमे ग्रह, नक्षत्रादिक संग पथ्वीपर प्राप्त प्राकृतिक संसाधन अबैत अछि जे विकासक प्रक्रियामे स्वयं निर्मित भेल अछि। एहिमे जल जैविक संसारक उत्पत्तिक लेल आवश्यक तत्त्व होइछ। जँ जल नहि तँ जीवन नहि। अस्तु, जलेसँ जीवन अछि आ जीवेसँ संसार अछि। प्रत्यक्ष रूपसँ सूर्यकेँ ब्रह्म कहल जाइछ आ पृथ्वी तथा अन्तरिक्षकेँ अण्ड; एकरे योगसँ पृथ्वीपर जैविक सृष्टि होइत अछि। तँ पृथ्वीसँ सूर्य धरि ब्रह्मण्ड कहबैत अछि। अस्तु, ब्रह्मण्डक प्रकीर्ण अर्थ यैह होइत अछि। ब्रह्म पुरुष तथा अण्ड प्रकृति– यैह दृष्टि दर्शनकेँ जन्म देलक अछि। सांख्य दर्शनक आधारे यैह थिक।

हम जनैत छी जे मनुष्य सभ प्राणीसँ विकसित एवं विवेकशील प्राणी होइत अछि। तैँ हिनकामे प्रकृतिक खोज तथा आविष्कारक क्षमता दृढ़ होइत गेल। प्रकृतिक रहस्य आइयेसँ नहि सोझराओल जा रहल अछि बल्कि शब्द एवं भाषा तककेँ अविष्कार प्रकृतिए कारणसँ भेल अछि। ई सत्य जे मनुष्य जाहि वस्तुक खोज क' लेलक, जकर रूप आ गुणक चिन्हान क' लेलक, ओकरा लेल शब्द प्रतीकक उपयोग सेहो कयल गेल आ एहि तरहेँ अमूर्त्त प्रकृति नाम रूप मूर्त्ततामे बदलि गेल आ आइ शब्द परिचयमे सम्पूर्ण प्रकृति परिचित अछि तथा जकर परिचय नहि अछि, ओकर परिचय लेल जा रहल अछि जाहिसँ एक टा नव दर्शन, विचार आ नैतिकताक विकास भ' रहल अछि।

जैविक सृष्टिक नवीन परिचय चार्ल्स डार्विनसँ होइत अछि जे प्राकृतिक चयनक सिद्धांतसँ जीव विज्ञान तथा चिकित्सा शास्त्रमे क्रांति आनलनि। हिनका दृष्टिसँ 'प्राकृतिक चयन' सिद्धांतक अर्थ स्पष्ट अछि जे– "This is a Natural selection by means for the survival of the fittest in the struggle for existence."[3] वस्तुतः प्राकृतिक वातावरणमे परिवर्तन भेलासँ जैविक संसारक सभ किछुमे परिवर्तन होइत अछि आ वैह जीव एहि धरतीपर टिकैत अछि जकरामे संघर्ष शक्ति तथा प्राकृतिक अनुकूलन क्षमता अधिक होइत अछि।

जीवनमे शब्द अछि संगीत अछि, परिकल्पना अछि, संवेग आ संवेदना अछि, सभ किछु भौतिक तत्त्वपर निर्भर करैत अछि जाहिमे जल एक टा प्रमुख भौतिक तत्व थिक। सभ किछु जल एवं जल

तत्त्वपर निर्भर करैत अछि। जँ जलकेँ ग्रहण नहि कयल जाइक तँ शरीरमे रक्तक निर्माण तथा एकर शारीरिक प्रवाह संभव नहि होयत आ एहन अवस्थामे नहि शब्द, नहि अर्थ, नहि संगीत, नहि परिकल्पना आ नहि संवेदना तथा संवेगक चेतनाशील गति भ' सकैछ। माने कोनो तरहक जैविक क्रिया आ परिकल्पनाशील गति संभव नहि भ' सकैछ, जँ भौतिक पदार्थ जल नहि होइक। सभ प्रकारक मानसिक क्रिया तथा एकर क्रियान्वयन भौतिके पदार्थपर निर्भर करैत अछि आ भौतिक तत्वमे जलो एहन तत्त्व थिक जाहिमे जीव आ वनस्पति संसार आकृत भ' रहल अछि। सृष्टिक जतेक कारण होइक ओहिमेसँ जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण थिक। तँ अवधारणात्मक जैविक संस्कृतिक आधारभूत विषय जलेसँ प्रारंभ होइत अछि।

ओना एहि पृथ्वीपर जीवनक उत्पत्ति आ विकासक रहस्य एखनो एक मौलिक प्रश्न बनल अछि जकरा सोझरयबामे वैज्ञानिक लोकनि निरंतर प्रयासरत छथि। जीवनक उत्पत्तिक विषयमे तँ एखनो मतैक्य नहि अछि परंच प्रमाणक प्रचूरता ओ अनुवांशिकीमे भेल प्रगति डार्विनक क्रमिक विकासवादक प्राकृतिक चयन (Natural Selection) क सिद्धांतकेँ अकाट्य सिद्ध क' देलक अछि।[4] जैविक संस्कृतिक मूलाधार विकासवादे सिद्धांत अछि जे ई सिद्ध करैत अछि जे पृथ्वीपर जल होयबाक बादे जीव सृष्टिक क्रमिक विकास विभिन्न योनिमे प्रारंभ होइछ। सभसँ पहिने जल जीवन, पुनश्च वनस्पति संसार आ स्थल जीवनक विकास भेल अछि। आधुनिक पक्षीक विकास–संदर्भे कहल गेल अछि जे एकर विकास संभवतः जलीय वातावरणमे प्रादुर्भूत जन्तुसँ भेल होयत। माने जीव सृष्टिक कारणमेसँ सभसँ महत्वपूर्ण कारण जले अछि जे पर्यावरणकेँ जैविक संतुलन दैत अछि आ वातावरणकेँ जीवानुकूल आद्रता प्रदान करैत अछि।

जल एक टा अकार्बनिक द्रव पदार्थ होइत अछि जे जीवनक आधार थिक। ई नहि सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक क्रियाकेँ सेहो संगति दैत अछि। तँ नहि सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक क्रियाकेँ सेहो संगति दैत अछि। तँ जले जीवन थिक – ई मान्यता प्रयोग आ प्रमाण सिद्ध अछि।

प्राचीन भारतीय मान्यताक अनुसारेँ शरीर पाँच भौतिक तत्त्वसँ बनल अछि– माटि, पानि, आगि, वायु आ आकाश।[5] एहिमेसँ पानिएमे आगि, वायु आ आकाशक गुण मौजूद रहैत अछि जाहि कारण शरीर तरंग (Wave) सँ शक्तिशाली बनल रहैत अछि। जँ पानि तरंगमे परिवर्तित नहि होइक तँ शरीर निर्बल भ' जायत आ अन्ततः जलहीन शरीर काल–कवलित भ' जायत। अस्तु, जले जीवमे शारीरिक तथा मानसिक लय आनैत अछि जाहिसँ जीवनक संगति बनल रहैत अछि। तँ शरीरमे प्रायः सभ प्रकारक रसायनिक अभिक्रिया जलेसँ सम्पन्न होइत अछि।

जलक अभावमे जीवनक कल्पनो संभव नहि अछि। तँ जले ओ कारण थिक जाहिसँ जैविक संसार अपने अस्तित्वकेँ शक्तिशाली बनबैत अछि। जलक शारीरिक विस्तार चेतना तकमे होइत अछि आ चेतना सेहो जलक अभावमे क्रिया–प्रतिक्रिया नहि क' सकैत अछि। जँ कही जे जीव चेतना शून्य भ' जाइत अछि तँ गलत नहि होयत। अस्तु हम एही संदर्भे जलक जैविक संस्कृतिक रूपमे अध्ययन करैत छी।

जैविक संस्कृतिसँ तात्पर्य अछि जीव मात्रक ओकरा योग्य सांस्कृतिक चेतनाक अध्ययन, अनुशीलन तथा परिमार्जन करब। ओना जीव विज्ञान मनक अस्तित्वकेँ द्वयम मानैत अछि। एकरा अनुसारेँ मन वा चेतना रासायनिक तत्त्व एवं एकर अभिक्रियाक परिणाम थिक। वस्तुतः कोनो प्रकारक रासायनिक तत्त्वक कमीसँ मनक शक्ति क्षीण होअए लगैत अछि। हम अध्यात्म आ जीव विज्ञानक अन्तर्बहसमे नहि जा चाहब मुदा एतबा अवश्य कहब जे जलेसँ जीवक यथायोग्य सांस्कृति चेतना निर्मित होइत अछि जाहिसँ जीवन मात्र एक टा लयात्मक क्रिया–व्यवहार करैत रहैत अछि जकरा जीवन कहल जाइछ। तँ एहि जीवनक लेल, ओकर संस्कारक समृद्धि एवं सुरक्षाक लेल जले आधारभूत तत्त्व थिक आ एही कारणेँ हम जलकेँ जैविक संस्कृतिक मूलाधार मानैत छी।

जल आ मानव संगतिक जखन मनुष्यकेँ ज्ञान भेलैक, तखन ओ अपन सभ्यता–संस्कृति निर्माण प्रायः नदी आ धारक तटपर प्रारंभ कयलक। ओना जीव मात्र नदी आ धारक संसर्गकेँ अपन अस्तित्व मानैत अछि मुदा जे कि मानव एक टा ज्ञान विज्ञानशील प्राणी होइत अछि, तँ ओकर अस्तित्व जाहि पदार्थ एवं भावसँ समृद्ध होइत अछि तकरा प्रति श्रद्धावनत रहैत अछि। ई प्रवृत्ति एक मात्र हिन्दू संस्कृतिमे पाओल जाइत अछि जे ई प्रकृतिके ईश्वर तथा मायक दर्जा दैत अछि। ई प्रत्येक अस्तित्व बोधक प्रकृति लग माथ झुकबैत अछि आ श्रद्धाक दृष्टिसँ देखैत अछि।

नदी घाटी सभ्यता आ संस्कृतिक विकास मानवक जल चेतनाक परिणाम थिक आ यैह जलक जैविक दृष्टिक संज्ञान जखन मानव लेलक तँ पोखरि, इनार, कूप तथा नलक व्यवस्था संभव भेल एवं एक टा नूतन दृष्टिक प्रणयन सेहो भेल जाहिपर आइ धरि वैज्ञानिक शोध कार्य क रहल छथि। ओ जल विद्युतक निर्माण हो वा कृषि कर्मक हेतु जलक उपयोगी व्यवस्था, नहर–छहर आदि सभ दृष्टिएँ जल जैविक संस्कृतिक स्वरूप बनल अछि। जलेसँ हिन्दू सभ अपन देवी–देवता आ प्रकृतिक पूजा करैत छथि जाहिसँ जलक प्रति हिनक सांस्कृतिक चेतनाक स्पष्ट पता चलैत अछि।

संस्कृति परम्परागत अनुस्यूत संस्कारकेँ कहल जाइत अछि।[6] एहू अर्थमे जले जैविक संस्कृति प्रमाण अछि। भारतीय सभ्यता आ संस्कृतिमे जलसँ सूर्यक पूजा करब, परम्परागत संस्कार थिक जे संस्कार एहि अर्थक अभिप्रेत अछि जे जल आ सूर्यक प्रकाशे पृथ्वीक कोखिकेँ चेतनासँ समादृत करैत अछि। जल आ सूर्यसँ पृथ्वीपर जैविक अस्तित्व अछि आ तँ जलसँ सूर्यक संरक्षणमे प्राप्त करैत अछि आ तँ सदैव वैदिक संस्कृतिमे प्रकृति पूजाक अन्तर्गत नदी आ धारक पूजा माता एवं ईश्वरक प्रतिरूप विमर्शमे होइत रहल अछि। जल विशेषज्ञ दिनेश कुमार मिश्रक अनुसार भारतमे नदीकेँ माताक दर्जा प्राप्त अछि आ माता केवल माता होइत छथि ओ संसाधन वा शोक कखनहुँ नहि भ' सकैत छथि। नदी प्रकृति–प्रदत्त उपहार थिक एवं धरतीपर साक्षात ईश्वर स्वरूप होइछ।

जल पृथ्वीपर अलग–अलग रूपमे भेटैत अछि– आसमानमे जलवाष्प आ बादरि, समद्रमे समुद्री जल आ कखना–कखनो हिमशैल, पहाड़मे हिमनद आ नदी तथा तरल रूपमे पृथ्वीपर एक बीफरक रूपमे सामान्यतः जल शब्दक प्रयोग द्रव अवस्थाक लेल होइत अछि मुदा ई ठोस अवस्थामे बर्फ आ गैसीय अवस्थामे भाप वा जलवाष्पक रूपमे पाओल जाइत अछि। ई तथ्य तँ सर्वविदित अछि जे जल अन्ततः नदी द्वारा समुद्रमे चलि जाइत अछि। अस्तु, कोशी तटीय भू–भागकेँ कोशी नदी घाटी सभ्यता ओ संस्कृतिक रूपमे देखब समीचीन होयत।

नदी मातृक क्षेत्र मिथिला अत्यन्त प्राचीन कालहिसँ जलाधिक्यबाला भू–भाग रहल अछि। एक दिसि हिमालयक बर्फ पघिलबाक कारणे तँ दोसर दिसि मेघवृष्टिसँ एतय जल प्लावनक स्थितिक उपस्थित भ' जाइछ।[7] कोशी क्षेत्र मिथिलाक ऐतिहासिक क्षेत्र थिक मुदा एकर उत्स महर्षि विश्वामित्रक कारणेँ आदि ज्ञानक स्रोत रहल अछि। कोशी नदीक भौगोलिक परिदृश्यक एवं स्रोत विमर्शक संदर्भे दिनेश कुमार मिश्र लिखैत छथि जे–"कोशी नदी हिमालय पर्वतमालामे प्रायः 7000 मीटरक उँचाईसँ अपन यात्रा शुरू करैत अछि जकर ऊपरी जल–ग्रहण क्षेत्र नेपाल तथा तिब्बतमे पड़ैत अछि। दुनियाँक सबसँ ऊँच शिखर माउन्ट एवरेस्ट तथा कंचनजंघा एहन पर्वतमाला कोशीक जलग्रहण क्षेत्रमे अबैत अछि। नेपालमे एकरा सप्तकोशी कहल जाइछ जे क्रमशः द्रन्दावती, सुनकोशीया मोट कोशी, तांबा कोशी, लिक्षु कोशी, दूध कोशी, अरुण कोशी तथा तामर कोशीक सम्मिलित प्रवाहसँ निर्मित होइत अछि। एहिमेसँ प्रथम पाँच नदीक संयोगसँ सुनकोशीक निर्माण होइत अछि आ ई पश्चिमसँ पूरब दिशामे बहैत अछि। ई सभ नदी गौरी शंकर शिखर तथा मकालू पर्वतमालासँ होइत अबैत अछि। छठम धारा अरुण कोशीक अछि जकर जलग्रहण क्षेत्रमे

सागर माथा (माउन्ट एवरेस्ट) अवस्थित अछि। सातम धारा पूरबसँ पश्चिम दिशामे बह' बाली तामर कोशी अछि जे कंचनजंघा पर्वतमालासँ पानि आनैत अछि। एहि तरहेँ सुनकोशी, अरुण कोशी तथा तामर कोशी नेपाल तक धनकुट्टा जिलामे त्रिवेणी नामक स्थानपर मिलि जाइत अछि आ एही ठामसँ एकर नाम सप्तकोशी, महाकोशी वा कोशी भ' जाइत अछि। त्रिवेणी पहाड़क मध्य स्थित अछि आ ई स्थान चतरासँ जतयसँ कोशी मैदानमे प्रवेश करैत अछि, प्रायः दस किलोमीटर उत्तरमे पड़ैत अछि।

मैदानमे उतरलाक बाद कोशीक पाठ 6सँ 10 किलोमीटरमे पसरि बेश चोड़गर भ' जाइत अछि आ फोरो कोशी प्रायः 50 किलामीटरक दूरी नेपाल सीमाक भीतर तय करैत नेपालक हनुमान नगरक लगीच भारतीय क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। हनुमान नगर कोशीक पच्छिमी तटपर स्थित अछि जखन कि पूर्वी तटपर भारतक भीमनगर कस्बा पड़ैत अछि। बिहारक सुपौल जिलाक भीमनगरसँ सहरसा जिलाक महिषी गाम तक कोशी लगभग दक्षिण पश्चिम दिशामे बहैत 100 किलोमीटरक यात्रा तय करैत अछि आ महिषीक नीचा लगभग 30 किलोमीटर बहलाक बाद कोशी मानसी सहरसा रेवले लाईनके कोपड़िया रेलवे स्टेशनक दक्षिण पार करैत अछि तथा कटिहार जिलामे कुरसेलाक लगीच गंगासँ संगम क' लैत अछि।" [8]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य–राम चौतन्य धीरज, पृष्ठभूमि सँ, शेखर प्रकाशन, पटना–24
2. तैत्तिरीयोपनिषद–ब्रह्मानंदवल्ली, प्रथम अनुवादक–गीता प्रेस, गोरखपुर
3. [Schmide] Rudolf] The Theory of Darwin and Their Relation to Philosophy] Religion and Morality] Chicago&Jansen me clurg and Company&1883] p-23.
4. विज्ञान, पर्यावरण आ समाज–डॉ. विद्यानाथ झा, मिथिलेन्दु प्रकाशन, दरभंगा, पृ.स. 86
5. रामचरित मानस तुलसी दास क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा।।
6. मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता, रामचैतन्य धीरज, नवारम्भ प्रकाशन, पटना, पृष्ठ सं0–75
7. विज्ञान, पर्यावरण आ समाज–डॉ. विद्यानाथ झा, मिथिलेन्दु प्रकाशन, दरभंगा, पृ. स. 67
8. दुइ पाटन के बीचमे, दिनेश कुमार मिश्र, लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून, पृ. सं0 – 2, 3